भारतीय राजनैतिक व्यवस्था के बारे में राहुल सांकृत्यायन का दृष्टिकोण

अवधेश कुमार

महापंडित राहुल सांकृत्यायन एक महान रचनाकार, अन्वेषी इतिहासकार और जनयोद्धा थे। भारतीय नवजागरण की चेतना के इस महान अग्रदूत ने हिंदी भाषा और साहित्य को प्रगतिशील और प्रौढ़ वैचारिक मूल्यों से जोड़ते हुए एक नई रचना संस्कृति विकसित की। व्यक्तित्व की तरह उनका रचना संसार भी व्यापक और बहुआयामी हैं। सचमुच आश्चर्य होता है कि किशोरावस्था में ही घर–बार छोड़ कर संन्यासी बन गए राहुल व्यवस्थित शिक्षा, दीक्षा और समय एवं सुविधा संबंधी कठिनाइयों के बावजूद इतने महान रचनाकार और बुद्धिजीवी कैसे बने, वे वर्ग संघर्ष के द्वारा किसानों और श्रमिकों में राजनीतिक चेतना जागृत कर भारत में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे।

राहुल सांकृत्यायन स्वीकार करते हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता ही सभी स्वतंत्रताओ की जननी है। इसके लिए राहुल भूमि का राष्ट्रीयकरण चाहते थे। राहुल ने सामुहिक खेती की बात की। राहुल सिर्फ किसानों के लिए क्रांति चाहते थे, खेतिहर मजदूरों के लिए नहीं। वे खेतिहर मजदूरों को जमींदारों के इशारों पर किसानों के खिलाफ लड़ने वाला मानते थे।